International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2023; 5(3): 07-09
Received: 19-12-2022
Accepted: 21-01-2023

डॉ. पूनम देवी
सहायक प्रोफेसर (हिंदी)
ताऊ देवीलाल राजकीय महिला महाविद्यालय, मुरथल, सोनीपत, भारत

Corresponding Author:
डॉ. पूनम देवी
सहायक प्रोफेसर (हिंदी)
ताऊ देवीलाल राजकीय महिला महाविद्यालय, मुरथल, सोनीपत, भारत

तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता एवं स्वरुप

डॉ. पूनम देवी

प्रस्तावना

तुलना करना मानव का स्वभाव है। वह किसी न किसी रुप में एक दूसरे से तुलना करता रहता है। किसी भी प्राणी या वस्तु की तुलना के द्वारा उसके गुण और अवगुण को परखा जाता है। इसी प्रकार साहित्य में भी तुलना का बहुत महत्व है। शोध के क्षेत्र में तुलनात्मक कार्य का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

दो या दो से अधिक भाषाओं में रचित साहित्य समान भाषा में रचना करने वाले दो या दो से अधिक साहित्यकारों की समानता और असमानता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। दो या दो से अधिक साहित्यकारों का किसी विशेष क्षेत्र में तुलनात्मक पद्धति के द्वारा अध्ययन करना मूल्यांकन की श्रेष्ठता को दर्शाता है।

''तुलना साध्य नहीं है। वह तो दो साहित्य, दो साहित्यकारों या दो विधाओं को जानने का साधन है जिससे उनकी विशिष्टता उजागर हो सके। साहित्यिक अनुसंधान की अनेक पद्धतियों–आलोचनात्मक पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, भाषा वैज्ञानिक पद्धति, समस्या मूलक पद्धति के समान ही तुलनात्मक पद्धति भी एक है, जो दूसरों से एकदम अलग न होकर भी कुछ कारणों से दूसरे से भिन्न है। यही सब शायद ध्यान में रखते हुए मैक्स मूलर ने कहा था –

All higher knowledge is gained by comparison and rests on comparison.”[1]

तुलनात्मक अध्ययन अर्थ एवं परिभाषा –

किसी विषय का तुलनात्मक अध्ययन मनुष्य के विचारों भावों और चेतना को दर्शाता है। ''तुलनात्मक अध्ययन विषय के विस्तृत फलक से संबंध रखता है। इसके आधार पर विषय से संबंधित सब अंगों को देखा परखा जाता है।''[2]

तुलनात्मक अध्ययन के अंतर्गत दो अलग–अलग भाषाओं में रचित साहित्य का या फिर एक ही भाषा के दो या अधिक साहित्यकारों का विभिन्न क्षेत्रों में साम्य, वैषम्य या प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन विस्तृत कलात्मकता और वैचारिकता के साथ किया जाता है। तुलनात्मक अध्ययन दो भाषाओं या साहित्यकारों में रागात्मक संबंध स्थापित करता है तथा ज्ञान के क्षेत्र को विस्तृत करता है।

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार – ''तुलनात्मक साहित्य एक प्रकार का अंतः साहित्यिक अध्ययन है जो अनेक भाषाओं को आधार मानकर चलता है। जिसका उद्देश्य होता है अनेकता में एकता का संधान।''[3]

रेने वेलेक कहते हैं, ''तुलनात्मक साहित्य, साहित्य के समग्र रुप का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करता है। जिसके मूल में यह भावना निहित रहती है कि साहित्यिक सर्जन और आस्वादन की चेतना जातीय एवं राजनीतिक भौगोलिक सीमाओं से मुक्त एकरस और अखंड होती है।''[4]

इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन साहित्य में श्रेष्ठता लाने के साथ–साथ एकता और अखंडता लाने का कार्य करता है। ''तुलनात्मक अध्ययन ही आज तुलनात्मक अनुसंधान का रुप ले चुका है। अर्थ तत्व की दृष्टि से तीन शब्द हैं– तुलना, अध्ययन व अनुसंधान। अध्ययन व अनुसंधान के बीच एक हल्की सी विभाजक रेखा है। जहां अध्ययन समाप्त होता है वहीं अनुसंधान का प्रारंभ होता है। अध्ययन पर तो साहित्य में अनगिनत पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। अनुसंधान और शोध की ओर दृष्टि बाद में गई है। विज्ञान का साथ देता हुआ शोध या 'अनुसंधान' शब्द वैज्ञानिक प्रक्रिया को हमारे मानस पटल पर ला देता है। यदि हम 'तुलना' शब्द की व्यवहारिक व्याख्या करें तो पहले हम दो व्यक्ति, दो ग्रंथ और दो युगीन प्रवृत्तियों के कुछ प्जमउे तय कर उन्हीं के आधार पर साम्य वैषम्य व तारतम्य निश्चित कर लेते हैं। कभी–कभी दो तुल्यमान में से एक की अपेक्षा दूसरा प्रधान हो जाता है। यद्यपि वैज्ञानिकता सर्वथा आग्रहों के त्याग पर बल देती हैं।''[5]

डॉ. इंद्रनाथ चौधुरी ने 'तुलनात्मक' साहित्य की भूमिका में अपना मत प्रस्तुत करते हुए यह माना है कि प्रत्येक साहित्य रचना स्वयं में पूर्ण होती है। क्योंकि प्रत्येक रचना साहित्यकार की सृजनशील कलात्मक अभिव्यक्ति है। सृजनशील कलात्मक अभिव्यक्ति कभी तुलनात्मक नहीं हो सकती।

डॉक्टर इन्द्र नाथ चौधुरी तुलनात्मक साहित्य को तुलनात्मक अध्ययन के रुप में स्वीकारते हुए कहते हैं– ''भारत जैसे बहुभाषी देश की स्थिति को ध्यान में रखते हुए तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा मात्र यही हो सकती है कि तुलनात्मक साहित्य विभिन्न साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन है तथा

साहित्य के साथ प्रतीति एवं ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों का भी तुलनात्मक अध्ययन है।[6] प्रकृति का नियम है कि कोई भी दो वस्तुएं एक जैसी नहीं हो सकती। इसके साथ ही यह भी सत्य है कि किन्हीं भी दो वस्तुओं में इतनी अधिक भिन्नता भी नहीं होती कि उनमें समानता ही न ढूंढी जा सके। तुलना करना, किसी एक को दूसरे से श्रेष्ठ बताना मानव स्वभाव रहा है अर्थात् यह भी कह सकते हैं कि मनुष्य का विकास ही तुलना और अनुकरण की प्रवृति के कारण हुआ है।

'तुलनात्मक अध्ययन' को लेकर पाश्चात्य साहित्य को तीनों क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है–

1 अमेरिकी स्कूल
2 पेरिस जर्मन स्कूल
3 रुसी स्कूल

"अमेरिकी स्कूल के विद्वान तुलनात्मक साहित्य के अंतर्गत ज्ञान के विविध क्षेत्रों के बीच साहित्य के संबंधों को स्वीकार करने के साथ–साथ साहित्यलोचन को भी तुलनात्मक अध्ययन का महत्वपूर्ण अंग स्वीकार करते हैं। सन् 1886 में एच० एम० पोजनेट ने अपने 'कंपेरेटिव लिटरेचर ग्रंथ में यह प्रकट होता है कि तुलना करना मनीषी और समीक्षक का परंपरागत कार्य रहा है।"[7]

अमेरिकी स्कूल के तुलनात्मक अध्ययन के स्वरुप का निर्धारण रेने वेलेक, डेविड मेलोन, हेरी लेविन आदि विद्वानों की विचारधारा के आधार पर किया गया है।

"पेरिस जर्मन स्कूल के अंतर्गत फ्रांसीसी विद्वान तथ्यात्मक संपर्कों और दस्तावेजों के विश्लेषण पर ज्यादा बल देते हैं।"[8]

जर्मनी की गोइथे, शलेगल और फ्रांस के बुवलो, सैतव्यूव ज्यान एतिम्बल आदि विद्वानों ने साहित्य के आपसी संबंधों, आदान–प्रदान और रुपान्तरों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

रुसी स्कूल के विद्वानों ने तुलनात्मक अध्ययन को साहित्यिक विधाओं, आंदोलनों तथा साहित्यिक संवृति का अध्ययन स्वीकार किया है।

अतः "तुलनात्मक साहित्य एक स्वतंत्र विषय है, जिसमें विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य की एक संपूर्ण इकाई के रुप में व्यापक पहचान की और अधिक संभावना बनती है। यह काम विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य की मानवीय ज्ञान और विशेष रुप से कलात्मक तथा वैचारिक क्षेत्रों के साथ तुलना से ही संभव हो सकता है।"[9]

तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र

तुलनात्मक अध्ययन का क्षेत्र बहुत विशाल है। डॉ. दयाशंकर मिश्र के अनुसार, "तुलनात्मक साहित्य का क्षेत्र विशाल है। आज तक प्रायः प्रभाव और वस्तु का ही तुलनात्मक अध्ययन किया जाता रहा है। परंतु हमें साहित्यिक आंदोलनों और साहित्यिक विधाओं का भी तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए। यानी युग प्रवृत्ति के आधार पर समग्र भारतीय साहित्य दस्तावेजों की पड़ताल करने से न केवल तुलनात्मक साहित्य का इतिहास तैयार होगा बल्कि भारतीयता की पहचान सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, दार्शनिक, साहित्यिक स्तरों पर संप्रेषणीय होगी। तुलनात्मक साहित्य विविध भाषाओं के लोकगीत और लोक साहित्य का संग्रह करके उनका भी तुलनात्मक अध्ययन करता है।"[10]

साहित्य के अंतर्गत निम्नलिखित क्षेत्रों में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है–

1. भाषा के साहित्य के अंतर्गत तुलनात्मक अध्ययन में दो या दो अधिक कवियों की तुलना की जा सकती है। एक ही कवि की दो कृतियों की तुलना की जा सकती है। दो या दो से अधिक साहित्यिक प्रवृत्तियों की तुलना की जा सकती है। एक ही कृति के अलग–अलग रुपों की तुलना की जा सकती है। दो या अधिक युगों की तुलना की जा सकती है।
2. एक भाषा के साहित्य या दूसरी भाषा के साहित्य पर प्रभाव को लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. समान साहित्यिक प्रवृति को लेकर अलग–अलग भाषाओं के साहित्यकारों के कृतित्व की तुलना की जा सकती है।
4. एक साहित्यिक व्यक्तित्व का अन्य साहित्य पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
5. एक भाषा की साहित्यिक प्रवृत्ति का दूसरी भाषा के साहित्य प्रवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
6. समान भाषा की और अलग–अलग भाषा की दो कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
7. दो या अधिक अलग–अलग भाषाओं के साहित्य में किसी एक विधा को लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

"भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन, विशेषतः हिंदी और हिंदीतर भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक व्याकरण के अध्ययन हिंदी भाषा के प्रसार के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।"[11]

तुलनात्मक अध्ययन का क्षेत्र बहुत अधिक व्यापक और विकसित है। भारत भाषा व संस्कृति में विविधताओं का देश है। भाषा व संस्कृति की इस विविधता को राष्ट्रीय स्तर की एकता तक ले जाने के लिए उनका गहन अध्ययन अनिवार्य हो जाता है। इसी प्रकार साहित्य के ज्ञान की गहनता को जांचने के लिए तुलनात्मक अध्ययन अनिवार्य हो जाता है। अनेकता में एकता को खोजना ही तुलनात्मक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है। इसीलिए रवींद्रनाथ ठाकुर ने तुलनात्मक अध्ययन को 'विश्व साहित्य' कहा है।

तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

विविध ज्ञान भंडार के बीच सामंजस्य स्थापित करना तुलनात्मक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है। तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा ही किसी विषय का संपूर्णता से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। तुलनात्मक अध्ययन ज्ञान के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करता है।

"तुलनात्मक साहित्य मात्र साम्य, वैषम्य प्रगट करने वाली तुलना भर नहीं है। यह तो साहित्य विशेष को पृष्ठभूमि प्रदान करने वाली, सामूहिक प्रवृत्तियों के संधान द्वारा मानवीय कार्यकलाप के अन्य क्षेत्रों के पारस्परिक संबंध से अवगत भी कराती है। वस्तुतः सर्वोत्कृष्ट साहित्य अर्थात् गौरव–ग्रंथों में देशकाल से परे तुलनात्मक अध्ययन द्वारा कुछ ऐसी विशिष्टताएं एवं संबंध –सूत्र प्रगट होते हैं जिन पर हमारा ध्यान भी नहीं जाता। गौरव–ग्रंथों पर पड़ने वाले देशज प्रभाव, उपलब्धियों का पाठालोचन, उस कृति का उत्स, प्रभाव–प्रतिक्रिया, व्यक्तिगत दृष्टिकोण आदि का अध्ययन वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा किया जा सकता है।"[12]

तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञान के क्षेत्र का विस्तार होता है। मनुष्य को संकुचित मनोवृति से मुक्ति मिलती है। तुलना के क्षेत्रों के बीच रागात्मक संबंध स्थापित होते हैं। तुलनात्मक अध्ययन सांस्कृतिक एकता का आधार बनता है।

"तुलना के बिना अनुसंधान पूर्ण नहीं होता। तुलनात्मक अनुसंधान द्वारा कृति या कृतिकार में सत्यान्वेषण करके निष्कर्मों का नवनीत निकाला जाता है। अतः तुलनात्मक अनुसंधान मनुष्य के विचारों, भावों और सामाजिक चेतना का दर्पण है। साहित्य के सम्यक अनुशीलन में तुलनात्मक दृष्टि महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।"[13] विश्व के विभिन्न देशों के लोगों में जाति, धर्म व वर्ण आदि अनेक आधारों पर विभिन्नताएं होते हुए भी उन सबके हृदय में समानताएं दिखाई देती हैं। अतः विभिन्न प्रांतों, देशों के

साहित्य के विभिन्न रुपों में अभिव्यक्त की गई मानवीय चेतना की अखंडता व विराटता को तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से ही प्रस्तुत किया जा सकता है। तुलनात्मक अध्ययन से विषय वस्तु के विषय में नई विशेषताएं हमारे समक्ष आती हैं, जो कि सामान्य अध्ययन से प्रकट नहीं हो पाती। तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से भाषा, साहित्य और ज्ञान भंडार के बीच पारस्परिक आदान–प्रदान से व्यापकता आती है। तुलनात्मक अध्ययन किसी विषय, क्षेत्र विशेष के पूर्वाग्रहों से मुक्ति दिलाता है तथ स्पष्ट व नवनीत निष्कर्षों की स्थापना करता है। तुलनात्मक अध्ययन ही विभिन्नता में एकता स्थापित करने में सहायक सिद्ध होता है तथा इसके साथ ही तुलना किए जाने वाले क्षेत्रों के बीच रागात्मक संबंध स्थापित होते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में विचारणीय विषय यह है कि तुलनात्मक शोध के अंतर्गत किसी पक्ष के छोटे या बड़े होने पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए। सभी तरह के पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर ही निष्कर्ष निकालना चाहिए। लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि निष्कर्ष में स्पष्टता न हो।

''भारत अनेक भाषाओं का विशाल देश है और गुण व परिमाण में सभी का अपना समृद्ध साहित्य है। भारतीय भाषाओं का संकलित साहित्य संपूर्ण यूरोपीय वांग्मय से कम नहीं है। इन सभी में अपनी–अपनी विशिष्ट विभूतियां हैं। इनमें प्राप्त ज्ञान सागर से भी गहरा, हिमालय से भी ऊंचा और ब्रह्मा से भी सूक्ष्म है। उनका तुलनात्मक अध्ययन करके कितने लोगों को खोजा जा सकता है तथा भारतीय जनता धारा की चेतना की अखंडता अनुसंधान हो सकता है।''[14]

अतः कहा जा सकता है कि तुलनात्मक अध्ययन सारगर्भित व्यापक ज्ञान भंडार का प्रवेश द्वार है। भारतीयता की अवधारणा को स्पष्ट और विकसित करने में तुलनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक स्वतंत्र विषय के शोध की अपेक्षा किसी समान महत्व वाले विषय से तुलना करने में अधिक उपलब्धि की संभावना रहती है। यह अपेक्षाकृत अधिक उत्तरदायित्व का कार्य है। तुलनात्मक अध्ययन में एक ही विचारधारा के अलग–अलग दृष्टिकोणों पर विचार करते हुए साम्य, वैषम्य, कौशल और अकौशल को ढूंढकर दोनों में निश्चित तारतम्य स्थापित किा जा सकता है। तुलनात्मक अध्ययन गतिशील जीवन की आवश्यकता है। तुलना की इस सहज वृति के कारण ही मानव जाति की सांस्कृतिक विरासत में संशोधन और विकास होता रहा है।

संदर्भ

1. डॉ० विजय पाल सिंह, हिंदी अनुसंधान, पृ. 257
2. संपादक डॉ. भ० ह० राजूरकर, डॉ राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरुप और समस्याएं, पृ. 11
3. संपादक डॉ. भ० ह० राजूरकर, डॉ राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरुप और समस्याएं, पृ. 34
4. संपादक डॉ. भ० ह० राजूरकर, डॉ राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरुप और समस्याएं, पृ. 34
5. इंद्रनाथ चौधरी, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, पृ. 4–5
6. डॉ. देवराज उपाध्याय, साहित्य एवं शोध–कुछ समस्याएं, पृ. 151
7. संपादक डॉ. भ. ह. राजूरकर, डॉ राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरुप और समस्याएं, पृ. 35
8. संपादक डॉ. भ. ह. राजूरकर, डॉ राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरुप और समस्याएं, पृ. 36
9. इंद्रनाथ चौधरी तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, प. 11
10. संपादक महावीर सिंह चौहान, तुलनात्मक साहित्यः सिद्धांत और समीक्षा, पृ. 38
11. संपादक डॉ. भ. ह. राजूरकर, डॉ राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरुप और समस्याएं, पृ. 30
12. संपादक नगेंद्र व टी. जी. मयंकड, तुलनात्मक साहित्य समाकलन, पृ. 68
13. संपादक डॉ. भ० ह० राजूरकर, डॉ राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरुप और समस्याएं, पृ. 40
14. संपादक डॉ. भ० ह० राजूरकर, डॉ राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरुप और समस्याएं, पृ. 39